

अयोध्या जा रही ट्रिस्ट बस और ट्रक की आमने-सामने भिंड़त, एक की मौत; दर्जनों लोग घायल
(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)
वाराणसी। जलालपुर हाईवे पर भवनाथुर ग्राम स्थित सोनभद्र से अयोध्या जा रही ट्रिस्ट बस और ट्रक के आमने-सामने भिंड़त हो गई। हादसे में एक शख्स की मौत हो गई है और दर्जनों लोग घायल बताए जा रहे हैं।



नजर आया रमजान का चांद मंगलवार को रखा जाएगा पहला रोजा; लोगों ने एक दूसरे को दी मुबारकबाद
(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)

काशी। बच्चे इसे लेकर उत्साहित रहे। जहां पुरुष विशेष नमाज तरावीह को लेकर चर्चा करते रहे तो वही घरों में महिलाएं भी इबादत के साथ ही सहरी और इफतार को लेकर चर्चाओं में मशाल रहीं। मुस्लिम बहुल इलाकों सरेंगा, बजरीहा, मदनपुरा, पीलीकोठी, नई दिल्ली, दालमंडी, ललूपुरा, पठानीटोला, सराय हड्डा में चाद को लेकर लोगों



टोपी की खरीदारी भी की। जबकि मस्जिदों में भी तरावीह की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जाता रहा। अल्लाह की इबादत का मुकद्दस महाना रमजान चांद के दीदार के साथ शुरू हो गया। सोमवार को चांद नजर का दीदार हुआ। 12 मार्च को मुसलमान पहला रोजा रखेंगे। इस साल का पहला रोजा सबसे छोटा और आखिरी सबसे लंबा होगा। इस साल पहला रोजा

बस और मैजिक वाहन में आग लगने से मची अफरातफरी, दमकलकर्मी मौके पर सिसकियों में बदली शहनाई की गूंज, जिस घर में शादी का मना रहे थे जश्न, वहां पसरा मातम

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)
वाराणसी। बालालपुर हाईवे पर भवनाथुर ग्राम स्थित सोनभद्र से अयोध्या जा रही ट्रिस्ट बस और ट्रक के आमने-सामने भिंड़त हो गई। हादसे में एक शख्स की मौत हो गई है और दर्जनों लोग घायल बताए जा रहे हैं।

दमकल विभाग को दी गई। जिसके बाद दमकलकर्मी ने मौके पर पहुंचकर आग पर काढ़ा पाने का काम शुरू किया। पुलिस के अनुसार फिल्हाल जनहानी की कोई सूचना नहीं है और प्रथम दृश्या यह समझ में आया है कि बिजली का तार टूट कर बस पर पिरने से आग लगी है।

जिसकी सूचना तुरंत पुलिस और



मऊ जिले के रानीपुर थाना क्षेत्र खिरिया खिरिया कांझा से लड़की पक्ष के लोग शादी समारोह के लिए गाजीपुर के महाहृषि धाम जा रहे थे। मिनी बस में सभी बराती सवार होकर सोमवार को 12 बजे के बाद रवाना हुए। अभी बस गाजीपुर जननद के मंदिर से कुछ दूरी पर पहुंची थी कि अचानक हाई वॉलेज तार की चेपट में आ गई और बड़ा हादसा हो गया। शादी की सारी खुशियां पल भर में मातम में बदल गई। जिस घर में सुबह तक शादी की खुशियां मनाई जा रही थीं, उस घर में मातम पसर गया। घटना के बाद पूरे गांव में सननटा पसर गया। घटना के बाद लोग चिंतित हो गए। सभी कांझा गांव से नंदू सरोज बेटी की शादी गाजीपुर जननद मरदह थाना क्षेत्र के महाहृषि धाम मंदिर में करने के लिए रिश्तेदारों एवं परिवार के साथ ही गयी।

ग्रामीण भी गए थे। घटना के बाद था। रानीपुर थाना क्षेत्र खिरिया के लिए रिश्तेदारों एवं परिवार के साथ बस में सवार होकर जा रहे थे। बस मंदिर के पास पहुंचे ही गाली थी कि बीच रास्ते में गुजर रही हाई वॉलेज तार की चेपट में आ गई। जिससे बस में आग लग गई। बस धूध धूध के जलने लगी। कुछ लोग करते से बाहर गिर गए। बाकी लोग बस में झूलस गए। 28 वर्षीय मौरा पतनी गोविंद और उसका चार वर्षीय बच्चा दिल्लाशु निवासी ओरनहार थाना सरायलखंसी, 35 वर्षीय मीरा पतनी अमरजीत तथा 16 वर्षीय नैसी पुत्री दिनेश कुमार निवासी खिरिया कांझा थाना रानीपुर का उपचार जिला अस्पताल में किया जा रहा है।



सभी लोग चिंतित हो गए। सभी कांझा गांव से नंदू सरोज बेटी की शादी गाजीपुर जननद मरदह थाना क्षेत्र के महाहृषि धाम मंदिर में करने

उर्जा मंत्री एके शर्मा के निर्देश पर तीन निलंबित, एक की सेवा समाप्त

गाजीपुर। बस हादसे को लेकर मनीष एक शर्मा ने बड़ी कार्रवाई की है। उन्होंने घटना को लेकर तीन को निलंबित कर दिया है। जबकि एक की सेवा समाप्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने पूर्वी चौथा विद्युत वितरण निगम के एम्डो, मंडलायुक, जिलाधिकारी एवं अधीक्षण अधियंता से बात की। सभी अधिकारियों को रात कार्य में तेजी लेते हुए, घायलों की मौत हो गई। जबकि एक लोग झूलस गए है। घटना की जानकारी होने पर ऊर्जा एवं नहर विकास मंत्री ए. के. शर्मा ने सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने तीन अधिकारियों को निलंबित और एक की सेवा समाप्त कर दी है। वहीं बस हादसे पर दुख व्यक्त करते हुए मृतकों की आत्मा को शांति प्रदान करने एवं परिजनों को हिम्मत देने की इच्छा से प्रार्थना की। मृतकों की मौत हो गई, जबकि 10 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं। घायलों की अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे का शिकार

हुई बस बरातियों से भरी थी। बस मऊ से एक वैवाहिक कार्यक्रम में जा रही थी, जिसमें कुल 38 बराती बस में सवार थे।



NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE

(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)

सर्टिफिकेट इन फायर एण्ड सेप्टी

फायर सेप्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड

फायर सेप्टी मैनेजमेंट कोर्स के बाद सेप्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन इंजिनियर, सिस्टम सिक्योरिटी एंड माइनिस्ट्रेट आदि विभिन्न पदों पर नियुक्त मिल जाती है। रिलीफ एजेंसी N.G.O., डिफेंस सर्विसेज फायर सर्विस आईंजेनेस फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पाकर लांट, स्टील लांट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इंडस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रॉनिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेप्टी मैनेजमेंट के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है।

नोट: फायर सेप्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।

★ C.O.P.A.

★ Electrician

★ Fitter

★ Security Service

★ Electric Technician

★ Fire Safety &

Industrial Security

★ Repair of Refrigerator

Training

★ Computer Hardware

& Maintenance

★ Computer Teacher

★ Welding Technology

★ Certificate in YOGA

Message

गवर्नर ग्लोबल ग्रुप ग्रुप

मानी

स्टाच चाचाराम ग्रुप, लंदन

एवं गोपनीय उद्योग विभाग

जल्दी बनाएं

मृतकों की बात की तरीफ

ग्रामीण विभाग

सम्पादकीय

विरोधियों के बेतुके
बयानों के कारण भी
भाजपा को मिलते हैं वोट
भाजपा की नीतियां आजी जगह पटेश जैसे अदित्यसीबड़ल राज्य

भाजपा का नाताथा अपना जगह है, लेकिन विरोधियों के बेतुके बयानों से आहत होकर भी जनता कांग्रेस के खिलाफ मत देने को विश्व हो जाती है। पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के परिणामों के निहितार्थ क्या है? यह ठीक है कि राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में जनता ने भाजपा की नीतियों-कार्यक्रमों और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व में हो रहे सकारात्मक परिवर्तनों से प्रभावित होकर बहुमत दिया है। परंतु लगता है कि राहुल गांधी और प्रियका गांधी वड्डा के बेतुके बयानों से आहत होकर भी जनता कांग्रेस के खिलाफ मत देने को विश्व हो जाती है। भले ही बीते एक वर्ष से इस दल की अध्यक्षता मलिकार्जन खरगे कर रहे हैं, परंतु पार्टी की परोक्ष कमान गांधी परिवार के हाथों में ही है। वर्षों से कांग्रेस में विचारधारा का टोटा है, जिसकी पूर्णी पिसे-पिटे वामपंथी जुमलों से करने का प्रयास हो रहा है। इसका सबसे ताजा उदाहरण कांग्रेस द्वारा तात्कालिक राजनीतिक लाभ के लिए राजनीति में जाति के भूत को पुनः जीवित करने का प्रयास है। कांग्रेसी नेताओं द्वारा इन चुनावों में 'जितनी आबादी, उतना हक' का नारा बाबार दोहराया गया। अभी तक सपा, बसपा, राजद जैसे क्षेत्रीय दल जाति आधारित राजनीति करते थे। यह पहली बार है, जब किसी राष्ट्रीय दल के रूप में कांग्रेस ने इस जिन्न-को बंद बोतल से बाहर निकालने की कोशिश की है। जाति निश्चय ही भारतीय समाज की एक सच्चाई है। परंतु अब आधुनिक शिक्षा, सर्वांगीण अवसर, तकनीकी दौर और बाजारवाद के युग में जाति की भूमिका गौण हो गई है। आज के आकांक्षावान युवा जातीय पहचान से ऊपर उठकर देखने की क्षमता रखते हैं। इसलिए राहुल-प्रियका के 'सत्ता में आने पर जातिगत-जनगणना कराकर आबादी के हिसाब से हक दिलाने' के बाद का उलटा प्रभाव हुआ। इसी बजह से अशोक गहलोत और भूपेश बघेल की योजनाओं के असंख्य लाभार्थी भी कांग्रेस से छिक गए। इससे पहले गत वर्ष गुजरात विधानसभा चुनाव और अपनी 'भारत जोड़ो' यात्रा के समय राहुल ने आदिवासियों को देश का 'असली मालिक' बताया था। यदि राहुल के लिए आदिवासी देश के 'असली मालिक' हैं, तो शेष दोनों दौरों तैयारी करना चाहिए।

‘इंडिया’ को अदरुना चुनौतया, गठबंधन का बचाने के लिए प्रबंधन का दरकार तीन राज्यों के विधानसभा चुनावों में अप्रत्याशित हार के बाद उपज रही निराशा से ‘इंडिया’ गठबंधन पर टूट का खतरा मंडरा रहा है। उसे अपनी गतिविधियों के व्यापक प्रबंधन के लिए एक पूर्णकालिक संचालक की दरकार है, पर दिक्कत यह है कि कांग्रेस की योजना में संयोजक का पद ‘अनावश्यक’ माना शोर से उठाए, जिनके अनुसार ईवीएम मशीनें सत्यापन योग्य नहीं हैं। सिटिजन पैनल के एक सदस्य सुभाषीष बनर्जी का तर्क है कि ईवीएम मशीन के स्रोत कोड को सार्वजनिक होना चाहिए या ईवीएम में केवल एक बार प्रोग्राम करने वाली चिप का ही इस्तेमाल होना चाहिए इत्यादि बातें केवल मुख्य मुद्दे से सहयोगियों से समर्थन मांग रहे हैं, उससे अखिलेश, ममता और नीतीश चकित हैं। यह भी याद किया जा सकता है कि तीन महीने पहले सितंबर में दिल्ली में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के अध्यक्ष शरद पवार के आवास पर विपक्ष के 13 सदस्यीय पैनल की एक बैठक हुई थी, जिसमें ‘इंडिया’ गठबंधन और वामपंथियों के साथ कुछ ही सीटों को लेकर किसी भी तरह के समझौते के पक्ष में नहीं थे। सभी जानते हैं कि अखिलेश यादव ने इसे कितना बड़ा मुद्दा बनाया, जिसे नीतीश कुमार और ममता बनर्जी का समर्थन भी मिला। दरअसल, मध्य प्रदेश में इस ‘अन्य’ राग के बोट भाजपा के खाते में पड़े, जिसने में राहुल और प्रियंका गांधी की कोई भूमिका नहीं है। मलिकार्जुन खरणे को अखिल भारतीय कांग्रेस के 88वें अध्यक्ष बने बेशक एक साल से ऊपर हो चुका है, लेकिन यह बात फैली हुई है कि किसी भी राजनीतिक फैसले या मंजूरी के लिए वह राहुल गांधी के पास जाते हैं। तो, अखिल कांग्रेस के लिए के कांग्रेस के प्रयास कुछ जलतंत्र मुद्दे हैं और ‘इंडिया’ गठबंधन में कई लोग ऐसे हैं, जो जाति-जनगणना के मुद्दे पर ज्यादा विचार-विमर्श की जरूरत को मानते हैं। इसी तरह मध्य प्रदेश में कमलनाथ द्वारा शुरू किए गए हिंदुत्व समर्थक कार्यक्रमों पर भी बात होने की पूरी उमीद है। ‘इंडिया’ गठबंधन को

आर वामपाद्यया के साथ कुछ ही सीटों को लेकर किसी भी तरह के समझौते के पक्ष में नहीं थे। सभी जानते हैं कि अखिलेश यादव ने इसे कितना बड़ा मूद्या बनाया, जिसे नीतीश कुमार और ममता बनर्जी का समर्थन भी मिला। दरअसल, मध्य प्रदेश में इस 'अन्य' वर्ग के बोट भाजपा के खाते में पड़े, जिसने में राहुल और प्रियका गांधी को काइ भूमिका तय नहीं है। मलिकान्जुन खरगो को अखिल भारतीय कांग्रेस के 88वें अध्यक्ष बने बेशक एक साल से ऊपर हो चका है, लेकिन यह बात फैली हुई है कि किसी भी राजनीतिक फैसले या मंजूरी के लिए वह राहुल गांधी के पास जाते हैं। तो, आखिर कांग्रेस के लिए



जा रहा है राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश, इन तीन हिंदी भाषी राज्यों के विधानसभा चुनावों में मिली अप्रत्याशित और अपमानजनक पराजय के बाद कांग्रेस को 'इंडिया' गठबंधन के भीतर से भी कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। उल्लेखनीय है कि विधानसभा चुनावों के नतीजे आने के बमुशिक्ल 48 घंटों के बाद ही मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रमुख कमलनाथ ने इंवीएम मशीनों के खिलाफ एक सामूहिक मुहिम के लिए जरूरी समर्थन जुटाने हेतु ममता बनर्जी, अखिलेश यादव और नीतीश कुमार तक पहुंचने की कोशिश की दरअसल, कमलनाथ चाहते हैं कि 'इंडिया' गठबंधन चुनावों पर न्यायमूर्ति मदन लोकुर की अद्यक्षता वाले सिटिजन कमीशन की सिफारिशों को जोर-भटकाने का काम करता है। अगर ये सभी मांगें मान भी ली जाएं (माना भी जाना चाहिए), तब भी ईवीएम सत्यापन योग्य नहीं होंगी। लेकिन ईवीएम के कथित दुरुपयोग के लिए 'इंडिया' गठबंधन का समर्थन पाने की कमलनाथ की इस कोशिश में एक बड़ा दोष है। पहला, यह पराजित पक्ष का तर्क है, और, दूसरा, ईवीएम से छेड़छाड़ का यह तर्क तेलंगाना में कांग्रेस के शानदार प्रदर्शन के संदर्भ में अपना अर्थ खोता दिखता है, जहां उसने बीआरएस और भाजपा, दोनों को प्रभावशाली अंतर से हराया, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों के दौरान 'अखिलेश वर्षिलेश' कहते हुए 'इंडिया' गठबंधन के सहयोगियों को प्रदेश से बाहर रखने के बाद कमलनाथ जिस दुस्साहस के साथ

ने अक्तुर्बार के पहले हफ्ते में महागठबंधन की पहले के लिए सहमति जताई लेकिन कमलनाथ ने ऐसे सार्वजनिक बैठक की मेज़ इन्कार कर दिया था, जो सरकार में बढ़ती कीमतों, हे और भ्रष्टाचार के मद्दों पर होगी। भोपाल में 'इंडिया' की बैठक को लेकर कमल विरोध को कई तरह से सकता है। उनका तर्क प्रस्तावित गठबंधन लोकसभा के लिए था, जो राज्य विभाग चुनाव में उन्हें नुकसान पहुंचा था, जो उन्हें लगा कि वह से जीत रहे हैं। उन्हें तमिल मुख्यमंत्री के पुत्र उदयगिरि सनातन धर्म पर की गई से उपजे विवाद की भी उथी। वह समाजवादी पार्टी

भाजपा के वाट प्रतिशत को 46 फीसदी तक पहुंचा दिया, जबकि कांग्रेस 40 फीसदी पर ही ठहर गई। सवाल यह है कि क्या कमलनाथ इस झटपत्र को टाल सकते थे? व्यापक तौर पर देखें, तो 'इंडिया' गठबंधन के कुछ सहयोगी अब कांग्रेस पर भरोसा नहीं कर पा रहे हैं। सीटों के बंतवारे के प्रस्तावित फॉर्मूले को अब टीएमसी, समाजवादी पार्टी, जदयू और आप की तरफ से ज्यादा विरोध का सामना कर पड़ सकता है। निराशा या अवसरवादिता के चलते 'इंडिया' गठबंधन के टूटने का भी खतरा है, क्योंकि, विषय को डर सताने लगा है कि 2024 के लोकसभा चुनाव के नतीजे लगभग तय ही हैं। दरअसल, 'इंडिया' गठबंधन की सभी वार्ताओं में गांधी परिवार एक कमज़ोर कड़ी बना हुआ है। कांग्रेस

आगे को राह क्या बचती है? विपक्ष या 'इंडिया' गठबंधन को यथाशीघ्र चुनाव- प्रबंधन के तंत्र, गती के बिंदु और सोशल मीडिया नीति को दुरुस्त कर लेना चाहिए। गठबंधन के समर्मन सबसे बड़ा सवाल नरेंद्र मोदी का है। क्या मतदाताओं की नजर में संभावित विकल्प बने बैगर मौजूदा प्रधानमंत्री से सवाल करना या उनकी आलोचना करना उचित है? 'इंडिया' गठबंधन के लिए कैच-22 (विरोधाभाषी स्थितियों में फंसना) जैसी स्थिति हो गई है। उन्हें मोदी को कठघरे में भी खड़ा करना है, और अपने बीच से किसी को प्रधानमंत्री के छेहरे के तौर पर न दिखाने को लेकर उनमें तकरीबन सहमति भी है। इसी तरह जाति जनगणना और आरक्षण के मुद्दों पर राहुल गांधी का खास जोर और धार्मिक कार्यक्रमों में बदलाव लाने अपनी गतिविधियों के व्यापक प्रबंधन के लिए एक पूर्णकालिक संयोजक की भी जरूरत है, जिस पर सहमति नहीं बन पा रही है। किसी से भियां नहीं है कि इसके लिए ममता बनजी, शरद पवार और नीतीश कुमार इसके कुछ दारेदार हैं, बशर्ते कांग्रेस से नेतृत्व (गांधी परिवार और खरांग), उनसे औपचारिक अनुरोध करें। दिक्कत यह है कि कांग्रेस की योजना में संयोजक का पद कुछ अस्पष्ट वजहों से 'अनावश्यक' माना जा रहा है। इन चुनौतियों को देखते हुए ममता, नीतीश और अखिलेश जैसे 'इंडिया' गठबंधन के नेता चाहते हैं कि कांग्रेस अपनी तरफ से सुलह के कुछ संकेत दे और अनौपचारिक तौर पर गठबंधन का नेतृत्व क्षेत्रीय दलों को सौंप। यह कड़वी दवा ही कांग्रेस के लिए एकमात्र उपचार है।

پاکستان میں حالات آج بھی وہی، شوہد
ادالات نے مان لی 44 سال پورانی گلتی

पाकिस्तान का शाष अदालत न में
44 साल बाद ही सही, लेकिन मान
लिया कि जुलिफ्कार अली भुट्टो को
दी गई फासी में उचित न्यायिक
प्रक्रियाओं का पालन नहीं हुआ था।
लेकिन सेना की जिस तानाशाही
की वजह से ऐसा हुआ, वह आज
भी पाकिस्तान की राजनीति पर हावी
है। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी)
के अध्यक्ष बिलावल भुट्टो जरदारी
पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट में काली
सलवार-कमीज और काले कोट
पहने खड़े थे। उनकी कोट की जेब
में विशुद्ध सिंधी रंगों गाल एक प्रिंटेड
रुमाल था। बिलावल अपनी कानूनी
टीम के साथ दिवंगत नाना यानी
पूर्व प्रधानमंत्री जुलिफ्कार अली भुट्टो
के मामले में फैसले का इंतजार कर

The image shows the exterior of the Supreme Court of Pakistan. The building is made of light-colored stone and features a distinctive tiered, stepped roof design. In front of the building is a large, open courtyard with some greenery and a few small trees. The sky is clear and blue.

जुल्फिकार अला भुट्टो का सहायता साबित किया है। मैं शहीद मोहतरमा बेनजीर भुट्टो के लिए सिर्फ दुआ कर सकती हूँ, जिन्होंने जीवन भर अपने पिता की बेगुनाही साबित करने के लिए अथक संघर्ष किया। चार दशकों के बाद आखिरकार न्याय की जीत हुई है। जुल्फिकार भुट्टो की दूसरी नातनी फातिमा भुट्टो, जो प्रसिद्ध लेखिका है, ने कहा, 'यह पाकिस्तान के पहले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री के खिलाफ किया गया ऐतिहासिक अन्याय था। हम अदालत के सर्वसम्मत फैसले का स्वागत करते हैं और दुआ करते हैं कि ऐसा अन्याय दोबारा कभी न दोहराया जाए।' लेकिन वकील हसन

मिजोरम को विकास चाहिए, जातीय राष्ट्रवाद के बजाय संरचनात्मक परिवर्तन के बादों पर भरोसा

मिजोरम के मतदाताओं ने एमानएफ के जातीय राष्ट्रवाद के बजाय जेडपीएम के संरचनात्मक परिवर्तन के बादों पर भरोसा किया। लेकिन राज्य की बदहाल आर्थिक

से बेदखल कर दिया है। इस पूर्वीतर राज्य में बदलाव की हवा इतनी तेज थी कि मुख्यमंत्री जोरामथंगा आइजोल ईस्ट-1 की सीट पर चुनाव हार गए। उन्हें

बारी से दो ही पाटियों-कॉन्ग्रेस और एमएनएफ का कब्जा रहा है। इन्हीं दोनों पाटियों के बीच दस-दस साल के अंतराल पर सत्ता का बंटवारा हुआ है। इन दोनों पाटियों के से ठीक पहले हुआ था। शुरुआत में जोरम पीपुल्स मूवमेंट छह क्षेत्रीय दलों का गठबंधन था, जिसमें मिजोरम पीपुल्स कॉन्फ्रेंस, जोरम नेशनलिस्ट पार्टी, जोरम

रहे थे। यह अदालत की लाइव कार्यवाही थी और पाकिस्तान समेत दुनिया भर के लोग इसे देख रहे थे। प्रधान न्यायाधीश ने सर्वसम्मति से फैसला सुनाते हुए कहा, 'जुलिकार अली भुट्टो के मामले की निष्पक्ष सुनवाई नहीं हुई और न ही संविधान की उचित न्यायिक प्रक्रिया का पालन किया गया। लाहौर उच्च न्यायालय द्वारा मुकदमे की कार्यवाही और सुप्रीम कोर्ट में अपील की कार्यवाही के दौरान निष्पक्ष सुनवाई के मौलिक अधिकार और संविधान के अनुच्छेद 4 एवं 9 में निहित उचित प्रक्रिया को पूरा नहीं किया गया, जबकि संविधान के अनुच्छेद 10 एवं 10 में उचित प्रक्रिया के तहत एक अलग और मौलिक अधिकार के रूप में निष्पक्ष सुनवाई की गारंटी दी गई है।' फैसला सुनते ही बिलावल रो पड़े और जेब से रुमाल निकालकर अपने आंसू पोछे। उनकी टीम के सदस्यों और समर्थकों की आंखों में भी आंसू थे। बाद में मीडिया से बात करते हुए उनकी आवाज कांप रही थी। जब उनकी मां बैनजीर भुट्टो की हत्या कर दी गई थी, तब भी मैंने छोटे से बिलावल को सार्वजनिक रूप से रोते हुए नहीं देखा था। अब बिलावल बड़े हो गए हैं और पीपीपी के अध्यक्ष हैं। वह न केवल अपने नाना बल्कि पीपीपी

विकास को बढ़ाया जा सकता है। इस बीच बिलावल की बहन आसिफा भुट्टो ने कहा कि अखिर भुट्टो की 'न्यायिक हत्या' के बाद सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार कर लिया था कि उन्हें निष्पक्ष सुनवाई से वंचित कर दिया गया था। उन्होंने कहा कि उनकी न्यायिक हत्या के 44 साल बाद सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार किया कि शहीद जुलिफ्कार अली भुट्टो, जो मुल्क के लिए एक बड़ी उम्मीद थे, को एक क्रूर एवं घड़यंत्रकारी तानाशाह द्वारा इस दुनिया से खत्म कर दिया गया। आसिफा बेनजीर भुट्टो की सबसे छोटी संतान है और हाल ही में एक दूसरे कारण से चर्चा में थी। उनके पिता आसिफ अली जरदारी और भाई बिलावल शुभ्दुर्राहम जरदारी ने संविधान के अनुच्छेद 86 के तहत भुट्टो की मौत के फैसले पर फिर से विचार करने के लिए शीरीष अदालत का दरवाजा खटखटाया था। सुप्रीम कोर्ट के इस ताजा फैसले की व्यष्टिभूमि यह है कि वर्ष 2011 में राष्ट्रपति रहते हुए आसिफ अली जरदारी ने संविधान के अनुच्छेद 86 के तहत भुट्टो की मौत के फैसले पर फिर से विचार करने के लिए शीरीष अदालत का दरवाजा खटखटाया था। सुप्रीम कोर्ट के इस ताजा फैसले का अनेक राजनेताओं एवं वकीलों ने स्वागत करते हुए इसे 'ऐतिहासिक' बताया है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा, 'इतिहास की गलतियों को मरणार्थी ममकिन तो नहीं है। लेकिन

ए नियाजी ने जो कहा, वह पाकिस्तान, सुप्रीम कोर्ट और नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण है- यह मानना कि जेड भुटो को निष्काश सुनवाई से वंचित रखा गया, एक स्वागतयोग्य निण्य है, लेकिन जिन संरचनात्मक मुद्दों ने ऐसा घोर अन्याय होने दिया, वे पाकिस्तान की राजनीतिक और कानूनी व्यवस्था का हिस्सा बने हुए हैं। एक निर्दीष राजनेता को एक ताकतवर सैन्य तानाशाह और उससे प्रभावित अदालत ने फांसी पर लटका दिया। इसी वजह से प्रधान न्यायाधीश ईसा ने टिप्पणी की कि हमारे न्यायिक इतिहास में कुछ ऐसे मामले हैं, जिन्होंने लोगों को मन में यह धारणा बनाई है कि या तो भय या पक्षपात ने कानूनी ढंग से न्याय देने की प्रक्रिया को बाधित किया है। इसलिए हमें आत्म-जिम्मेदारी की भावना से, विनप्रता के साथ अपनी पिछली गलतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए, और यह सुनिश्चित करने की हमारी प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में कानून के प्रति अटूट निष्ठा के साथ न्याय दिया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि जब तक हम अपनी पिछली गलतियों को स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक खुद को सुधारनी सकते और न ही सही दिशा में



जेडपीएम के ललथनसांगा ने दो हजार मतों से पराजित किया। जेडपीएम ने 40 सदस्यीय विधानसभा की 27 सीटों पर कब्जा जामाया, जबकि सत्तारूढ़ एमएनएफ को 10 सीटें ही मिलीं। भाजपा को दो और कांग्रेस को मात्र एक सीट मिली। गोरतलब है कि

यथास्थितिवादी नजरिये से जनते ऊँक गई थी। ऐसे में जब जेडपीएच ने यह नारा दिया कि 'बदलाव देलिए गोट करें, हमारी नई पाठों को मौका दें', तो मतदाताओं का उम्मीद दिखी और उन्होंने जेडपीएच पर भरोसा करके मतदान किया। जोरम पीपुल्स मूवमेंट का गठ

एकसो डस मूवमेंट, जोरम डिसेंटलाइजेशन फंट, जोरम रिफार्मेशन फंट और मिजोरम पीपुल्स पार्टी शामिल थीं। लेकिन 2019 में सबसे बड़ी संस्थापक पार्टी मिजोरम पीपुल्स कॉन्वैंस गठबंधन से अलग हो गई और अब यह पांच छोटे-छोटे दलों का

हो विज्ञापन राह पड़ा और उसे रुमाल निकालकर अपने आंसू पौछे। उनकी टीम के सदस्यों और समर्थकों की आंखों में भी आंसू थे। बाद में मीडिया से बात करते हुए उनकी आवाज कांप रही थी। जब उनकी मां बैनजीर भुट्टो की हत्या कर दी गई थी, तब भी मैंने छोटे से बिलावल को सार्वजनिक रूप से रोते हुए नहीं देखा था। अब बिलावल बड़े हो गए हैं और पीपीपी के अध्यक्ष हैं। वह न केवल अपने नाना बल्कि पीपीपी

संक्षिप्त समाचार

मोदी का अंतिम लक्ष्य राहुल ने संविधान को फिर से लिखने के 'संघ परिवार' के छिपे इरादों पर साधा निशाना

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)

नोएडा। अंकुर साहित्य परिवार द्वारा रविवार का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में सम्मान

